,कांकेर की तकनीकी सहायता से 200 कड़कनाथ मुर्गियों के साथ पालन शुरू किया। प्रवीण ने देखा कि हैचिंग प्रक्रिया के लिए महंगे बाहरी हैचरी सिस्टम पर निर्भर रहना एक चुनौती है। इस समस्या के समाधान के लिए, उन्होंने 120W हीटर और 35W मोटर से चलने वाली एक मशीन बनाई, जो केवल 1.2W बिजली की खपत करती है और 800 अंडों को 85% सफलता दर के साथ से सकती है। यह मशीन पोर्टेबल और कम रख-रखाव वाली है, जिससे छोटे किसानों को लाभ हुआ है। इस नवाचार के परिणामस्वरूप, उनकी आय ₹25,000–₹60,000 प्रति माह से बढ़कर ₹85,000–₹90,000 तक हो गई, और चूजों की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ।

2. रंधी राम सोनकर – पोर्टेबल हैचरी सह ब्रूडर मशीन

रंधी राम सोनकर, जो राजनांदगांव जिले के श्वेताटोला, ढोंगरगांव के निवासी हैं, ने ग्रामीण पोल्ट्री पालकों के लिए एक पोर्टेबल हैचरी सह ब्रूडर मशीन का निर्माण किया है। उन्होंने 2017-18 में कृषि विज्ञान केंद्र, राजनांदगांव की सहायता से यह मशीन तैयार की, जो कड़कनाथ, वानराज, बटेर, बतख और हंस जैसे पक्षियों के अंडों के लिए उपयुक्त है। इस मशीन में थर्मल बॉक्स, हीटिंग कॉइल, कूलिंग फैन, एलईडी बल्ब और तापमान-नमी नियंत्रण के लिए एक बटन की सुविधा शामिल है। यह मशीन 100-150 अंडों के लिए डिज़ाइन की गई है और 37°C तापमान बनाए रखती है, जिससे कड़कनाथ जैसे पक्षियों के लिए 21 दिनों में सफल हैचिंग संभव होती है। अब तक, रंधी राम ने 250 से अधिक मशीनें ₹40,000 प्रति यूनिट की दर से बेचकर अन्य किसानों को भी लाभान्वित किया है। यह नवाचार विशेष रूप से छोटे किसानों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हो रहा है।

3. राधेश्याम ध्रुव – एकीकृत खेती में कड़कनाथ पालन

राधेश्याम ध्रुव, जो रायगढ़ जिले के सुरगी गाँव के निवासी हैं, ने एकीकृत खेती प्रणाली को अपनाते हुए कड़कनाथ पालन को अन्य कृषि गतिविधियों के साथ जोड़ा है। स्नातक शिक्षा प्राप्त करने के बाद, उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, सुरगी से प्रशिक्षण लेकर जल प्रबंधन, पोल्ट्री पालन, मशीन उपयोग और शेड निर्माण जैसी तकनीकों को अपनाया। उनके फार्म पर लगभग 500 मुर्गियाँ हैं, जिनमें कड़कनाथ, सोनाली और वानराज नस्लें शामिल हैं, जिससे वे वार्षिक लाभ के रूप में ₹1 लाख कमाते हैं। इसके अलावा, वे 16 एकड़ में मछली पालन कर ₹3 लाख, गायों से ₹70,000 और फसलों से ₹4 लाख तक की आय अर्जित कर रहे हैं। राधेश्याम ने जलाशयों से सिंचाई और पशु अपशिष्ट से खाद बनाकर संसाधनों का पूर्ण उपयोग किया है। उनकी यह मॉडल खेती प्रणाली वर्षभर आय सुनिश्चित करती है और अन्य किसानों के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

कड़कनाथ पालन: सतत और लाभकारी ग्रामीण आजीविका की दिशा में कदम

कड़कनाथ मुर्गी पालन वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बनकर उभरा है, जो स्वरोजगार सृजन और ग्रामीण युवाओं के पलायन को रोकने में सहायक हो सकता है। यह व्यवसाय सीमित संसाधनों के साथ भी शुरू किया जा सकता है और कम समय में लाभ प्रदान करता है। आदिवासी क्षेत्रों में कड़कनाथ का सांस्कृतिक महत्व भी है, जहाँ इसके मांस को पारंपरिक रूप से औषधीय और शक्ति वर्धक माना जाता है। कड़कनाथ पालन कृषि से जुड़ी विविधता को बढ़ावा देता है, जिससे किसान एक ही आय स्रोत पर निर्भर न रहकर पशुपालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन आदि के संयोजन से अपनी आय को स्थिर और सतत बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, यह पर्यावरण के अनुकूल है क्योंकि इसमें रासायनिक दवाओं और बाहरी संसाधनों की आवश्यकता कम होती है। इस प्रकार, कड़कनाथ पालन सतत विकास, पोषण सुरक्षा, और ग्रामीण आत्मनिर्भरता की दिशा में एक सशक्त कदम है, जो छोटे और सीमांत किसानों के जीवन को सकारात्मक रूप से बदल सकता है।

प्रस्तुतकर्ता :
पी. मूवेन्थन, गुंजन झा, श्रावणी सान्याल, निरंजन प्रसाद, सुमन सिंह एवं हेम प्रकाश वर्मा।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क: nasf9033nibsm@gmail.com

प्रकाशक :
डॉ. पी. के. राय
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़– 493225
फोन – 0771–2277333
ई–मेल – director.nibsm@gmail.com

Publication No. - NIBSM/EF/2025/87

भाकृअनुप ICAR

National Agricultural Science Fund

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान कोष

Indian Council of Agricultural Research
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

कड़कनाथ पालन: छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए सुनहरा अवसर

ICAR - National Institute of Biotic Stress Management
भाकृअनुप – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
Baronda, Raipur, Chhattisgarh - 493225, Ph. 0771-2277333
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 493225, फो. 0771-2277333
E-mail : director.nibsm@gmail.com

परिचय

वर्तमान समय में, ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन एक प्रभावशाली और लाभकारी व्यवसाय के रूप में उभर रहा है। विशेष रूप से, देशी नस्लों के संरक्षण और उनके व्यावसायिक उपयोग के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। इस संदर्भ में, कड़कनाथ मुर्गा एक अनोखी और प्रशंसित नस्ल है, जो अपने विशेष रंग, औषधीय गुणों और पोषण मूल्य के कारण देशभर में लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। यह नस्ल न केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अद्वितीय है, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी किसानों के लिए एक सुनहरा अवसर प्रस्तुत करती है। छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में, जहाँ प्राकृतिक संसाधनों और पारंपरिक पशुपालन की समृद्ध परंपरा है, कड़कनाथ पालन रोजगार, पोषण और स्वास्थ्य के त्रैतीय लाभ प्रदान कर सकता है। इस लेख में, हम कड़कनाथ मुर्गे की विशेषताओं, पालन की तकनीक, बाजार की संभावनाओं और छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए इसके महत्व पर चर्चा करेंगे।

कड़कनाथ मुर्गे की विशेषताएँ

कड़कनाथ मुर्गा, जिसे "कालीमासी" के नाम से भी जाना जाता है, देशी नस्लों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसकी उत्पत्ति मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के झाबुआ और अलीराजपुर क्षेत्रों में मानी जाती है, लेकिन अब छत्तीसगढ़ सहित कई अन्य राज्यों में इसका पालन तेजी से बढ़ रहा है। इस नस्ल की पहचान इसके विशिष्ट काले रंग से होती है—इसके पंख, त्वचा, मांस, और यहां तक कि रक्त और आंतरिक अंगों का रंग भी गहरा स्लेटी या काला होता है। यह अद्वितीय विशेषता इसे अन्य मुर्गियों से अलग बनाती है। पोषण के दृष्टिकोण से, कड़कनाथ मुर्गे का मांस उच्च गुणवत्ता वाला माना जाता है, क्योंकि इसमें प्रोटीन की मात्रा (25-27%) अधिक होती है, जबकि वसा और कोलेस्ट्रॉल की मात्रा अन्य व्यावसायिक मुर्गियों की तुलना में कम होती है। इसके मांस में आयरन, एमिनो एसिड, और आवश्यक विटामिन्स की प्रचुरता होती है। कड़कनाथ का मांस औषधीय गुणों से भरपूर माना जाता है, विशेष रूप से हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, अस्थमा, और मधुमेह जैसी बीमारियों में इसके लाभकारी प्रभावों के लिए जाना जाता है। इसे ऊर्जा बढ़ाने वाला, इम्यून सिस्टम को मजबूत करने वाला, और थकान को दूर करने वाला भी माना जाता है। इन सभी विशेषताओं के कारण, कड़कनाथ मुर्गा न केवल पोषण का एक उत्कृष्ट स्रोत है, बल्कि इसकी बाजार में भी उच्च मांग है, जिससे यह किसानों के लिए एक लाभकारी विकल्प बनता जा रहा है।

छत्तीसगढ़ में कड़कनाथ पालन की संभावनाएँ

छत्तीसगढ़ राज्य अपनी समृद्ध जैव विविधता, घने वन क्षेत्र और अनुकूल जलवायु के कारण पशुपालन, विशेषकर मुर्गी पालन के लिए अत्यधिक उपयुक्त माना जाता है। कड़कनाथ मुर्गा, जो मूलतः मध्य भारत की आदिवासी बेल्ट से संबंधित है, छत्तीसगढ़ की जलवायु और पारिस्थितिकी के लिए पूरी तरह से अनुकूल है। यहाँ की गर्म, आर्द्र और अर्ध-वनवासी स्थितियाँ इस नस्ल के विकास के लिए एक आदर्श वातावरण प्रदान करती हैं।राज्य के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों में पारंपरिक रूप से मुर्गी पालन का अभ्यास किया जाता रहा है, जिससे कड़कनाथ जैसी नस्ल को अपनाने के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक स्वीकृति पहले से ही मौजूद है। इन क्षेत्रों में उपलब्ध संसाधनों, जैसे खुली जगह, प्राकृतिक आहार (कीड़े, बीज, जंगली फल आदि) और पारंपरिक अनुभव का उपयोग करके कड़कनाथ पालन को कम लागत में सफलतापूर्वक शुरू किया जा सकता है।इसके अलावा, कड़कनाथ की रोग प्रतिरोधक क्षमता और स्थानीय वातावरण में अनुकूलन क्षमता इसे और भी लाभकारी बनाती है। यदि इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता और विपणन सुविधाओं के साथ जोड़ा जाए, तो छत्तीसगढ़ में यह नस्ल ग्रामीण आजीविका सशक्तिकरण, पोषण सुरक्षा और रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण साधन बन सकती है।

पालन तकनीक व प्रबंधन

कड़कनाथ पालन की सफलता के लिए वैज्ञानिक तकनीकों और उचित प्रबंधन का होना अत्यंत आवश्यक है। सबसे पहले, शेड का निर्माण ऐसे स्थान पर किया जाना चाहिए जो ऊँचाई पर हो, ताकि जलजमाव की समस्या न हो। शेड का फर्श पक्का होना चाहिए और जल निकासी की उचित व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए। स्थान का चयन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि आसपास पर्याप्त हरियाली हो, शुद्ध हवा का प्रवाह बना रहे, और शेड धूप और वर्षा से सुरक्षित हो।आहार प्रबंधन के संदर्भ में, कड़कनाथ मुर्गियों को संतुलित आहार प्रदान करना आवश्यक है, जिसमें प्रोटीन, खनिज लवण और विटामिन की पर्याप्त मात्रा हो। प्रारंभिक अवस्था में चूजों को चिक स्टार्टर दिया जाता है, इसके बाद ग्रोवर और लेयर आहार दिया जाता है। इसके साथ ही, उन्हें हरे चारे, कीड़े, अंडे के छिलके और मक्का जैसी स्थानीय उपलब्ध वस्तुएं भी दी जा सकती हैं। स्वच्छ और ताजे पानी की उपलब्धता हमेशा सुनिश्चित होनी चाहिए, क्योंकि पानी की कमी से उत्पादन क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। टीकाकरण कार्यक्रम का पालन अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए, जैसे न्यूकैसल रोग और गांठदार त्वचा रोग के खिलाफ समय पर टीके लगाना, जिससे रोग नियंत्रण में सहायता मिलती है। रोग और परजीवी नियंत्रण के लिए नियमित सफाई, फिनायल या चूने से शेड की कीटाणुहीनता, और बाहरी परजीवियों (जैसे जूं और किलनियाँ) से बचाव के उपाय आवश्यक हैं। बीमार पक्षियों को तुरंत अलग करके पशु चिकित्सक से सलाह लेना चाहिए। इस प्रकार, यदि कड़कनाथ पालन को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उचित तकनीकों और सतत देखरेख के साथ किया जाए, तो यह एक अत्यंत लाभकारी और दीर्घकालिक आजीविका का स्रोत बन सकता है।

उत्पादन लागत और लाभ विश्लेषण

कड़कनाथ मुर्गी पालन एक कम निवेश में अधिक लाभ देने वाला व्यवसाय साबित हो रहा है, खासकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए। प्रारंभिक निवेश लागत में शेड का निर्माण, चूजों की खरीद, आहार, पानी की व्यवस्था, टीकाकरण, और दैनिक देखभाल शामिल होती है। यदि कोई किसान 100 चूजों से पालन शुरू करता है, तो लगभग ₹50,000 से ₹60,000 का निवेश अपेक्षित होता है, जिसमें ₹15,000-20,000 शेड निर्माण और उपकरण पर, ₹20,000 चूजों पर, और शेष राशि आहार और चिकित्सा पर खर्च होती है। संचालन लागत में प्रति माह आहार, श्रम, दवा और रख-रखाव शामिल होते हैं, जो लगभग ₹5,000 से ₹7,000 तक हो सकते हैं।लाभ के अनुमान की बात करें, तो कड़कनाथ मुर्गा बाजार में ₹700 से ₹1000 प्रति किलोग्राम तक बिकता है, जबकि वयस्क मुर्गे का औसत वजन 1.5 से 2 किलोग्राम होता है। इस प्रकार, 100 मुर्गियों से कुल ₹1.5 से ₹2 लाख की आमदनी प्राप्त की जा सकती है। यदि कुल खर्च ₹70,000 तक होता है, तो एक बैच से किसान ₹80,000 से ₹1 लाख तक का शुद्ध लाभ कमा सकता है। यह लाभ दर सामान्य ब्रॉयलर या अन्य देशी नस्लों की तुलना में कहीं अधिक है, जहाँ बिक्री मूल्य कम और पोषण व औषधीय गुण सीमित होते हैं।अन्य नस्लों की तुलना में, कड़कनाथ का मांस अधिक मूल्य पर बिकता है क्योंकि इसमें उच्च प्रोटीन, कम कोलेस्ट्रॉल और औषधीय गुण होते हैं। इसके अलावा, इसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहतर होती है, जिससे दवा पर खर्च कम होता है। मांग में निरंतर वृद्धि और उपभोक्ताओं के प्रीमियम वर्ग में इसकी पसंद के कारण इसकी बाजार स्थिरता भी अधिक रहती है। इन सभी कारणों से, कड़कनाथ पालन छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए एक अत्यंत लाभकारी और स्थायी व्यवसाय बन सकता है।

बाजार और विपणन रणनीति

कड़कनाथ मुर्गा अपने विशेष पोषण गुणों, औषधीय महत्व और स्वाद के कारण आज बाजार में उच्च मांग में है। खासकर स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं, डायबिटिक और हृदय रोगियों, फिटनेस प्रेमियों और शहरी ग्राहकों के बीच इसकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है। इसका मांस ₹700 से ₹1000 प्रति किलोग्राम तक बिकता है, जो सामान्य ब्रॉयलर से 3-4 गुना अधिक है, और इसके अंडों की कीमत भी ₹25–₹30 प्रति अंडा तक होती है, जिससे यह एक लाभकारी व्यवसाय बनता है।ब्रांडिंग और उत्पाद पहचान इस व्यवसाय की सफलता में महत्वपूर्ण हैं। यदि किसान अपने उत्पाद को "ऑर्गेनिक", "देशी नस्ल", "कम कोलेस्ट्रॉल", और "औषधीय गुणों से युक्त" जैसे टैग के साथ पेश करें, तो उत्पाद की विश्वसनीयता और मूल्य में वृद्धि होती है। पैकेजिंग और लेबलिंग के माध्यम से उपभोक्ताओं में उत्पाद की अलग पहचान बनाई जा सकती है। सामूहिक ब्रांडिंग के लिए किसान स्वयं सहायता समूह , एफपीओ , या सहकारी समितियों का सहारा ले सकते हैं।विपणन के लिए, कड़कनाथ को स्थानीय हाट-बाजारों, पोल्ट्री विक्रेताओं, और रेस्टोरेंट्स में बेचा जा सकता है। इसके अलावा, सोशल मीडिया और लोकल डिलीवरी एप्स के माध्यम से डायरेक्ट टू कंज्यूमर मॉडल अपनाया जा सकता है। कई युवा उद्यमी ई-कॉमर्स साइटों पर कड़कनाथ के अंडे और मांस की होम डिलीवरी भी कर रहे हैं।इस प्रकार, यदि उचित विपणन रणनीतियाँ, गुणवत्तायुक्त उत्पाद और ब्रांडिंग तकनीकें अपनाई जाएं, तो कड़कनाथ पालन से जुड़े किसान स्थायी आमदनी अर्जित कर सकते हैं और स्थानीय से राष्ट्रीय बाजारों तक अपनी पहुँच बना सकते हैं।

सरकारी योजनाएं और समर्थन

कड़कनाथ पालन को बढ़ावा देने के लिए राज्य और केंद्र सरकार द्वारा कई योजनाएं और प्रोत्साहन कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जिनका लाभ उठाकर किसान अपनी आजीविका को सशक्त बना सकते हैं। सरकारी सब्सिडी योजनाओं के तहत, विभिन्न पशुपालन योजनाओं में शेड निर्माण, चूजों की खरीद, आहार, टीकाकरण और उपकरणों पर 25% से 50% तक की सब्सिडी प्रदान की जाती है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY), राष्ट्रीय आजीविका मिशन (NRLM), और राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (Bihan – छत्तीसगढ़) के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों और व्यक्तिगत किसानों को वित्तीय सहायता भी उपलब्ध कराई जा रही है। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक कड़कनाथ पालन जैसी ग्रामीण उद्यमशीलता परियोजनाओं के लिए कम ब्याज दरों पर ऋण प्रदान करता है, और साथ ही अनुदान सहायता और परियोजना रिपोर्ट तैयार करने में भी मार्गदर्शन करता है। राज्य के पशुपालन विभाग द्वारा "कड़कनाथ विकास योजना" जैसी विशेष योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिसमें चयनित किसानों को चूजे, टीके, दवाएं, आहार और तकनीकी सहायता निःशुल्क या रियायती दरों पर दी जाती है।इसके अलावा, कृषि विज्ञान केंद्र , पशु चिकित्सा महाविद्यालय, और जिला पशुपालन विभाग द्वारा समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जहाँ किसानों को वैज्ञानिक तरीकों से पालन, शेड निर्माण, आहार प्रबंधन, रोग नियंत्रण और विपणन की जानकारी दी जाती है। कई स्थानों पर इनक्यूबेटर, ब्रूडर, फीडर, और वॉटरर जैसी सामग्री भी रियायती दरों पर उपलब्ध कराई जाती है।इस प्रकार, यदि किसान इन योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर सही तरीके से आवेदन करें, तो वे बहुत कम लागत में कड़कनाथ पालन शुरू करके एक स्थायी और लाभकारी व्यवसाय स्थापित कर सकते हैं।

केस स्टडी: कड़कनाथ पालन से सफल हुए किसान

1. प्रवीण देहरी – कड़कनाथ के लिए लो-कॉस्ट हैचिंग मशीन

प्रवीण देहरी, जो कांकेर जिले के नवागांव भावगिर के निवासी हैं, ने कड़कनाथ मुर्गी पालन में तकनीकी नवाचार को शामिल करते हुए एक कम लागत वाली इनक्यूबेटर सह हैचिंग मशीन विकसित की है। उन्होंने 2019 में कृषि विज्ञान केंद्र